जनसंख्या एवं आर्थिक विकासः भारतीय संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

रामचन्द्र राणा

शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड

सारांश

किसी देश के आर्थिक विकास में जनसंख्या का अपना एक विशेष महत्व है। विभिन्न काल खंडों में उभरने वाली विश्व की सभ्यताओं के निर्माण एवं पतन का श्रेय मानवीय जनसंख्या को ही रहा है। विध्वंस और नव निर्माण मानव जाति की कलाकृतियों के दो प्रमुख रूप है। जिस प्रकार मनुष्य दुनिया के इतिहास का रचियता भी है और नायक भी ठीक उसी प्रकार जनसंख्या किसी देश के आर्थिक विकास के लिए फायदेमंद भी है और नुकसानदेय भी। लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह बिल्कुल सत्य है कि यहां जनसंख्या आर्थिक विकास के लिए तब तक नुकसानदायक है जबतक की मानवीय संसाधनों के उपयोग का बेहतर कार्य योजना तैयार नहीं होता। प्रस्तुत शोध में इन्हीं बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

शब्द कुंजीः आर्थिक विकास, जनसंख्या वृद्धि, विदेशी विनिमय संकट, खुली बेरोजगारी, मानव श्रम बल

परिचय

जनसंख्या अर्थात् मानव बल को आर्थिक विकास को गति प्रदान करने वाला माना जाता है। उत्पादन के साधनों में जनसंख्या सबसे महत्वपूर्ण है। यह देश के संपत्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनसंख्या उत्पादन का सक्रिय साधन है जो उत्पत्ति के अन्य निष्क्रिय साधनों को सक्रीय बनाता है। जनसंख्या के द्वारा देश के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में सहायता मिलती है। जनसंख्या न सिर्फ उत्पादक है बल्कि उत्पादक के साथ –साथ उपभोक्ता भी है, अतः जनसंख्या अन्य उत्पादक कार्यो के विस्तार

एवं उद्योगों की बनी चिजों के लिए बाजार मांग का सृजन करती है। उद्योगों का विकास तथा विस्तार वस्तुओं की मांग द्वारा प्रभावित होता है। इस प्रकार जनसंख्या साधनों के प्रयोग तथा उद्योगों के लिए एवं गैर कृषि क्षेत्र में बनी वस्तुओं के लिए बाजार उपलब्ध कराते हुए और श्रमिकों की आपूर्ति द्वारा देश की विकास प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाती है।

किसी देश के आर्थिक विकास को जनसंख्या प्रभावित करती है। यह बात सर्वविदित है। एक स्थिति तक जनसंख्या आर्थिक विकास के लिए आवश्यक होती है, परंतु एक सीमा के पश्चात् जनसंख्या आर्थिक विकास में बाधक हो जाती है। जनसंख्या के महत्वपूर्ण दो पहलू – संख्यात्मक और गुणात्मक। यदि संख्यात्मक पहलू को देखें तो तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या तथा जनसंख्या का बहुत बड़ा आकार आर्थिक विकास को अवरूद्ध करता है। लेकिन यदि देश की जनसंख्या कुशल एवं प्रशिक्षित हो तब उत्पादकता में सुधार तथा उत्पादन में वृद्धि करके आर्थिक विकास की गति को तेजी से बढ़ाती है।

जहां तक भारत की बात है, यहां जनसंख्या वृद्धि की दर तीव्र है और साथ ही जनसंख्या का आकार बड़ा होने के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। भारत में जनसंख्या आर्थिक विकास को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। यहां आर्थिक विकास का लाभ दृष्टिगोचर नहीं होता और देश के साधनों तथा उत्पादन का अधिकांश भाग जनसंख्या के भोजन तथा उसकी अन्य सुविधाओं पर खर्च हो जाता है। यहां विकास के लिए बहुत कम साधन बचते हैं, पुंजी निर्माण की प्रक्रिया बुरी तरह प्रभावित होती है और यह विकास की गति को अवरूद्ध करती है। इसके साथ ही साथ गरीबी, बेरोजगारी, खाद्यान्न का अभाव जैसी अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। प्रोफेसर सिंगर का मानना है कि 'जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की दर पर नकारात्मक प्रभाव डालती है, बचत दर को घटाती है तथा विनियोग की उत्पादकता को कम करती है।' प्रोफेसर मायर भी इस संबंध में कहते हैं कि 'भारत जैसे विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, पुंजी का विस्तार करने वाले निवेशों एवं नवप्रवर्तनों को प्रोत्साहित नहीं करती, बल्कि पुंजी संचय की दर को कम करती है, अर्ध बेरोजगारी के आकार में वृद्धि करती है तथा बहुत हद तक पुंजी को शिशुओं के

भरण पोषण की ओर ले जाती है जो उत्पादक आयु तक पहुंचने से पहले ही मर जाते हैं। इस प्रकार ऐसे देशों में देश का संसाधन पुंजी निर्माण में न लग कर जनसंख्या के भरन पोषण में समाप्त हो जाता है।

भारतीय संदर्भ में आर्थिक विकास में जनसंख्या एक बाधक तत्व की भूमिका निभाती है। जो निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट होता है–

1. प्राकृतिक संसाधनों के सापेक्ष में जनसंख्या का घनत्व – भारत में जनसंख्या वृद्धि से भी अधिक महत्वपूर्ण तत्व प्राकृतिक संसाधन तथा तकनीकी के सापेक्ष में जनसंख्या का घनत्व का है। अर्थव्यवस्था में साधन सीमित रहने पर जनसंख्या वृद्धि से जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाता है। अर्थव्यवस्था में पुंजी सीमित है तथा जनसंख्या वृद्धि से श्रमिकों की संख्या निरंतर बढ़ जाती है। उत्पादन फलन से पुंजी की जगह श्रमिक को प्रतिस्थापन किया जाता है। फलतः उत्पत्ति ह्रास नियम लागू हो जाता है। जनसंख्या वृद्धि की गति तीव्र होने पर एवं भूमि अथवा अन्य प्राकृतिक साधन स्थिर रहने पर उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील हो जाता है।

2. आयु संघटन के दृष्टि से जनसंख्या की नकारात्मक भूमिका– जनसंख्या में वृद्धि से जनसंख्या का आयु संघटन में बदलाव हो जाता है जो आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक होता है। इस संदर्भ में गिल महोदय का मानना है कि जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से बच्चों की संख्या बढ़ जाती है जो कि अनुत्पादक जनसंख्या है। देश की अर्थव्यवस्था पर बच्चों की संख्या में लगातार वृद्धि भार स्वरूप है जो भारत जैसे देश के आर्थिक विकास में बाधक सिद्ध होता है।

3. जीवन स्तर उँचा करने में नकारात्मक भूमिका– भारत जैसे देशों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होने से जीवन स्तर पर बुड़ा प्रभाव पड़ता है। अर्थशास्त्रीयों का मानना है कि मानव श्रम बल बढ़ने से कुल उत्पादन बढ़ता है लेकिन श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि होने पर प्रति श्रमिक उत्पादकता में कमी हो जाती है। जनसंख्या वृद्धि से प्रतिव्यक्ति आय घट जाती है फलतः जीवन स्तर उंचा करने में कठिनाई होती है।

4. जनांकिकीय निवेश में वृद्धि और आर्थिक निवेश में कमी – जनसंख्या वृद्धि से जनांकिकीय निवेश बढ़ता है लेकिन उसके साथ ही लोगों में बचत करने की क्षमता बढ़ती है। परिणामस्वरूप निवेश की आवश्यकता तथा निवेश योग्य कोषों की पूर्ति में असंतुलन पैदा हो जाता है। जनांकिकीय निवेश अथवा आवश्यक निवेश से तात्पर्य उस निवेश से है जो बढ़ती हुई जनसंख्या को स्थिर जीवन स्तर पर बनाए रखने के लिए जरूरी है। इस संदर्भ में अर्थशास्त्रीयों का मानना है कि तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह एक निश्चित प्रतिव्यक्ति उत्पादन को आवश्यक निवेश की मात्रा को तो बढ़ा देती है लेकिन निवेश योग्य कोषों की पूर्ति में वृद्धि के प्रति तटस्थ बनी रहती है। इस प्रकार भारत जैसे देशों में जनसंख्या के वृद्धि के कारण कुल निवेश का बहुत बड़ा भाग जनांकिकीय निवेश के रूप में समाप्त हो जाता है तथा आर्थिक निवेश, जो कि आर्थिक विकास का आधार है, उसके लिए कुछ भी नहीं बचता है।

5. प्रतिव्यक्ति आय पर नकारात्मक प्रभाव– तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या का प्रतिव्यक्ति आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि एक निश्चित स्तर तक जनसंख्या वृद्धि प्रतिव्यक्ति आय को बढ़ाती है परन्तु उसके बाद वह उसे आवश्यक रूप से कम करती है। जब तक आर्थिक विकास की दर जनसंख्या वृद्धि के दर से अधिक रहती है तब तक प्रतिव्यक्ति आय लगातार बढ़ती रहती है। लेकिन जब जनसंख्या की वृद्धि दर, आर्थिक विकास दर का अतिक्रमण करने लगती है, जैसा की भारत जैसे देशों में देखने में आता है, तब प्रतिव्यक्ति आय का गिरना अनिवार्य हो जाता है।

6. खाद्यान्न आपूर्ति की समस्या – भारत में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या खाद्यान्न आपूर्ति की समस्या को जन्म देती है। आज हरित क्रांति के पश्चात भी थोड़ा बहुत खाद्यान्न समस्या बनी ही रहती है। खाद्यान्न समस्या आर्थिक विकास को तीन तरह से प्रभावित करती है –

क). खाद्यान्न की आपूर्ति अप्रयाप्त होने पर जनसंख्या का पोषण पर्याप्त रूप से नहीं हो पाता है। फलतः कार्य कुशलता एवं उत्पादन क्षमता घटती है तथा इसका दुष्परिणाम निम्न

प्रतिव्यक्ति उत्पादन एवं निर्धनता के रूप में सामने आता है। इस प्रकार खाद्यान्न समस्या से समाज में एक दुष्चक्र वृत का निर्माण होता है जो कि आर्थिक विकास की प्रमुख बाधाएं है।

ख). खाद्यान्न सामग्री के अभाव के कारण, अल्प विकसित देशों को खाद्यान्न पदार्थ दूसरे देशों से आयात करना पड़ता है, जो भुगतान संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव तो डालता ही है साथ ही विदेशी विनिमय संकट को और भी अधिक बढ़ा देता है।

ग). विदेशी विनिमय का उत्पादक कार्यों में उपयोग न हो पाना, जनसंख्या के अत्यधिक दबाव का तीसरा नकारात्मक प्रभाव है।

विदेशी विनिमय, जिसका प्रयोग आर्थिक विकास के लिए पूंजीगत सामान का आयात करने के लिए किया जा सकता था, खाद्यान्न सामग्री के आयात पर करना पड़ जाता है। परिणाम स्वरूप पुंजीगत आयात की क्षमता घटती है जिसका आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7. बेरोजगारी में वृद्धि– तीव्र गति से जनसंख्या बढ़ने से मानव श्रम बल की पूर्ति में भी वृद्धि हो जाती है, जिससे बेरोजगारी की संभावना बढ़ जाती है। जनसंख्या वृद्धि का नकारात्मक प्रभाव खुली बेरोजगारी, अर्ध बेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी, अदृश्य बेरोजगारी के रूप में सामने आता है। यह बेरोजगारी जनसंख्या के अपव्यय का प्रतीक है जो आर्थिक विकास दर को निम्न स्तर पर बनाए रखता है। इतना ही नहीं बेरोजगारी देश में प्रभाव पूर्ण मांग को भी घटा कर आर्थिक विकास पर प्रतिकुल प्रभाव डालती है।

8. असंतुलित विकास – तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भारत का विकास असंतुलित तरीके से हो रहा है, क्योंकि जनसंख्या में होने वाली ज्यादातर वृद्धि को अंतोगत्वा कृषि क्षेत्र में हीं लगाना पड़ता है। भारत में चुकि पुंजीगत साधनों का अभाव है, अतः इस अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि को निर्माणकारी उद्योगों में लगाना संभव नहीं हो पाता, फलतः भूमि पर बढ़ता हुआ जनसंख्या का भार कृषि में उत्पादकता तथा प्रतिव्यक्ति आय को कम कर के, देश के आर्थिक विकास को अवरूद्ध वह असंतुलित बना देता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भारत विश्व का चीन के बाद सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। यहां मानव श्रम बल की बहुतायत है। किसी भी देश के आर्थिक विकास में मानव श्रम बल की महत्वपूर्ण सकारात्मक भूमिका होती है लेकिन भारत में ठीक इसके विपरित स्थिति है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि यहां जनसंख्या को लेकर विशेष कार्ययोजना का सर्वथा अभाव पाया गया है। भारत में जनसंख्या बल न हो कर बोझ के रूप में है। यहां जनसंख्या तो बहुत अधिक है लेकिन उस जनसंख्या में कुशल जनसंख्या का प्रतिशत बहुत कम है। अतः यहां एक ओर जनसंख्या को कुशल बनाने और दूसरी ओर जनसंख्या का बेहतर नियोजन करना आवश्यक है। यदि इस मानव श्रम बल का बेहतर उपयोग योजना बद्ध तरीके से किया जाए तो निश्चित रूप से यह भारत के आर्थिक विकास के लिए वरदान साबित होगा।

संदर्भ सुची

1. *सिंह, एस. पी., आर्थिक विकास एवं नियोजन, एस चंद एण्ड कंपनी लिमिटेड प्रकाशन, वर्ष 2005, पृ0सं0 283*

2. वर्मा, प्रोफेसर पी.सी., आर्थिक विकास एवं पर्यावरणी अर्थशास्त्र, तिरूपति उर्मिला पल्लवी प्रकाशन, पटना, वर्ष 2003, पृ0सं0 27

3. सुमन, डॉ0 एच.एन.पी.एस., भारतीय अर्थव्यवस्था, आलोक भारती प्रकाशन पटना, वर्ष 2009, पृ0सं0 55

4. Afzal, M., 2009. Population Growth and Economic Development in Pakistan, The Open Demography Journal, 2: 1-7.

5. Coleman, D. (2006). Immigration and ethnic change in low fertility countries: A third demographic transition. Population and Development Review, 32(3), 401–446.

6. Dyson, T. (1991). On the demography of South Asian famines, Part 1. Population Studies, 45(1), 5–25.

7. Gopalaswamy, R. A. (1962). Family planning: Outlook for government action in India. In Cycle V. Kise (Ed.), Research in family planning (p. 78). Princeton University Press.

8. Jha, P., Kesler, M. A., Kumar, R., Ram, F., Ram, U., Aleksandrowicz, L., Bassani, D. G., Chandra, S., & Banthia, J. K. (2011). Trends in selective abortions of girls in India: Analysis of nationally representative birth histories from 1990 to 2005 and census data from 1991 to 2011. Lancet, 377, 1921–1928.

9. Namboodiri, K. (1996). Population Growth and Economic Development. In: A Primer of Population Dynamics. The Springer Series on Demographic Methods and Population Analysis. Springer, Boston, MA. https://doi.org/10.1007/978-1-4757-8994-2_11

10. Ram, U. (2010). Levels and patterns of permanent childlessness in India and its states. Demography India, 39(1), 81–101.